छत्तीसगढ़ राज्य में बस्तर संभाग के विकास में पर्यटन उद्योगों की भूमिका एवं चुनौतियाँ

:: अनुक्रमणिका ::

(1) शीर्षक : छत्तीसगढ़ राज्य में बस्तर संभाग के विकास में पर्यटन उद्योगों की भूमिका एवं चुनौतियाँ

(2) प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय 3—4

(3) प्रस्तावित शोध विषय पर पूर्व में हुये शोध का विवरण 4

(4) विषय चयन का उद्देश्य 4—5

(5) प्रस्तावित शोध का महत्व 5—6

(6) शोध प्रविधि 6—8

(7) परिकल्पना या प्रस्तावित शोध का अनुमानित परिणाम 8—10

(8) संदर्भ ग्रंथ—सूची 11—12

प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय

प्राकृतिक रूप से आकर्षक स्थल व मानव निर्मित पुरातन समय का चिन्हित मुकाम तथा मानवीय सभ्यताओं क्रमांक के बेमिसाल प्रसाद व राजघराने, पर्यटन का केन्द्र माना जाता है। पर्यटन स्थल न केवल लुभावने स्थान होते है वरन् मानव जिज्ञासा को तृप्त करने का एवं सर्वाधिक उत्साह सर्जक स्थल भी होता है। साथ ही समुद्र, झरने, नदी, पहाड़, जल प्रताप, जंगल व इसमें निवास करने वाले अद्भूत जीव–जन्तुओं को देखने व परखने का स्थान पर्यटन केन्द्र होता है। जहां देश एवं विदेश के यात्री ऐसे स्थानों के लुत्फ उठाने के लिए सदा आते जाते हैं। जिसे एक उद्योग का दर्जा देकर सरकार ने अपने आय का एक जरिया भी बनाया है अतः पर्यटन उद्योग मानवीय सभ्यताओं के विकास के साथ–साथ सम्पत्ति में आर्थिक विकास संभावनाओं की एक सशक्त साधक भी बनता जा रहा है।

पर्यटन उद्योग एक ऐसा उद्योग है, जो किसी स्थान के प्रति लोगों को आकर्षित करता है, वहां पहुंचाकर रखता है, वहां पहुंचने पर खान–पान की व्यवस्था करता है तथा पुनः उनको उनके घर वापस भेजता है, पर्यटन एक आधारभूत एवं अति स्वैच्छिक मानव क्रिया है जिसकी प्रशंसा तथा प्रोत्साहन की अपेक्षा प्रत्येक सरकारों और सभी लोगों से की जाती है।

प्राचीन काल में पर्यटन का स्वरूप छोटा, एकांकी या कुछ परिवारों तक सीमित था, तब तक इसे उद्योग नहीं माना जाता था, परंतु आज विश्व के प्रत्येक देश, राज्य से बड़ी संख्या में पर्यटक दूर देशों की यात्राऐं कर अपने ज्ञान बढ़ाने, मानसिक तनाव को कम

करने, उनके प्राकृतिक दृश्यों को देखने के लिए यात्रा करते है। देखने या परखने का स्थान पर्यटन केन्द्र होता है जिसे सरकार ने पर्यटन उद्योग का दर्जा दिया है।

छ.ग. राज्य विविध सांस्कृतियों का राज्य है। छ.ग. राज्य के इतिहास ने अनेकानेक परंपराओं को विकसित किया है। जिसमें आध्यात्मिकता से लेकर भौतिकता, विकास की बेमिसाल यादें तटजनित यात्राओं का वृतांत कहती है। भारत में ऐसे पौराणिक एवं ऐतिहासिक घटनाऐं, समय व काल की विशेषताओं को परिभाषित करती है। पर्यटन उद्योग न किसी उत्पाद को जन्म देती है, और न ही मानव सुविधाओं में वृद्धि करता है, परन्तु फिर भी मानव सृजित आमोद–प्रमोद व मनोरंजन करने का एक साधन व समाधान के रूप में राजस्व वृद्धि का एक सर्वाधिक सशक्त माध्यम भी है।

छ.ग. राज्य में पर्यटन उद्योग के फलते–फूलते कारोबार से रोजगार एवं आय संवृद्धि के महती उपादानों को ही अध्यागत शोध प्रबंध की समिधा बनाई गई है। भौगोलिक क्षेत्र से भिन्न स्थिति के लिए वरदान एवं समूचा विश्व में छत्तीसगढ़ का परिचाय बस्तर संभाग अपने पर्यटन स्थलों के लिए प्रचलित है।

प्रस्तावित शोध विषय पर पूर्व में हुये शोध का विवरण

प्रस्तावित शोध छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित बस्तर संभाग में पर्यटन उद्योगों की भूमिका एवं चुनौतियाँ से संबंधित है, जबकि छत्तीसगढ़ राज्य में पर्यटन उद्योगों की भूमिका एवं संभावनाओं का मूल्यांकन किया गया है न कि बस्तर संभाग के पर्यटन उद्योगों की भूमिका एवं चुनौतियों का।

विषय चयन का उद्‌देश्य

किसी भी शोध को करने का मुख्य किसी न किसी कारण को खोजना या पता लगाना होता है, इस विषय के चयन या अध्ययन का मुख्य उद्‌देश्य बस्तर संभाग में

पर्यटन उद्योगों की कार्य प्रणाली का अध्ययन करके बस्तर संभाग में इसकी सार्थकता का परीक्षण करना है। साथ ही छत्तीसगढ़ राज्य में पर्यटन उद्योगों की भूमिका का अध्ययन कर इसके द्वारा दी गई सुविधाओं में इसके योगदान बस्तर संभाग का मूल्याकन करना है सारांश में प्रस्तुत शोध प्रबंध के उद्देश्य निम्नलिखित है :–

1. बस्तर संभाग की अर्थ व्यवस्था में पर्यटन उद्योगों की भूमिका एवं संभावनाओं का मूल्यांकन करना।
2. पर्यटन उद्योगों द्वारा संचालित विभिन्न परियोजनाओं का अध्ययन करना।
3. बस्तर संभाग में पर्यटन उद्यागों के कार्यों का मूल्यांकन करना।
4. बस्तर संभाग में पर्यटन उद्योगों से जुड़े विभिन्न घटकों से संबंधित समस्याओं के समाधान के लिए सुझाव देना।
5. बस्तर संभाग के शहरी एवं ग्रामीण अधोसंरचना के विकास में पर्यटन उद्योगों की भूमिका का अध्ययन करना।
6. बस्तर संभाग मे पर्यटन उद्योगों की सार्थकता का परीक्षण करना एवं इसकी सार्थकता बढ़ाने या वृद्धि के लिए ठोस सुझाव प्रस्तुत करना।
7. पर्यटन उद्योगों को अधिक से अधिक यात्रा में प्रचार कर विदेशी सैलानी को आकर्षित करना।
8. छत्तीसगढ़ राज्य के पर्यटन उद्योगों के माध्यम से विश्व पर्यटन के मानचित्र पर स्थापित करना।

प्रस्तावित शोध का महत्व

नवोदित छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर संभाग में पर्यटन उद्योग का महत्व और बढ़ गया है क्योंकि पर्यटन विश्व के कुछ बड़े उद्योगों में से एक है। उद्योग का दर्जा प्राप्त होने के कारण इससे जुड़े सभी क्षेत्रों में कैरियर की संभावना प्रबल एवं विस्तृत है। वर्तमान की

व्यस्त दिनचर्या से अलग मनोरंजक एवं आरामदायक यात्रा काफी आत्म संतुष्टि का बोध कराती है। प्रस्तावित शोध के महत्व निम्न है :–

1. बस्तर संभाग में पर्यटन उद्योगों के विकास के लिए नवीन परियोजनाओं का पता लगाना।
2. बस्तर संभाग में रोजगार की संभावना में वृद्धि करना।
3. बस्तर संभाग में विदेशी मुद्रा अर्जित करने का जरिया या स्त्रोत होना।
4. बस्तर संभाग में प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है उनका उचित प्रयोग कर पर्यटन उद्योग का विकास करना।
5. पर्यटन संबंधी समस्या को दूर करने के लिए पर्यटन मनुष्य के जीवन का अहम हिस्सा बनता जा रहा है और जैसे–जैसे छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर संभाग में इसका विकास होगा, इस क्षेत्र का दायरा भी बढ़ता जायेगा। क्योंकि वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के कारण सम्पूर्ण विश्व तीव्रता से परिवर्तित हो रहा है।
6. छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित बस्तर संभाग पर्यटन उद्योग के माध्यम से अपनी नवीन पहचान को परिभाषित करेगा।

शोध प्रविधि

शोध प्रविधि की शिला पर ही शोध कार्य स्थापित है। शोध प्रबंध को साकार करने तथा उद्‌देश्य परक निष्पत्ति प्रदान करने में सांख्यिकी आधारित शोध प्रविधियों को अपनाया गया है, जो निम्नानुसार है :–

1. सांख्यिकी की विधा पर शोध की श्रृंख्ला को उन्नत तथा प्रभावी बनाने हेतु शोध प्रविधि की विभिन्न समीक्षा को यथा स्थान अपनाया गया है।

2. शोध प्रक्रिया को गतिशील बनाने में प्रतीपगमन एवं संभावनाओं में सिद्धांत को उपयोग बनाने की चेष्टा की गई।

3. शोध प्रबंध को आकर्षक एवं एक दृष्टि में बोध गम्य बनाने हेतु रेखा चित्र, ग्राफ एवं डायग्राम को यथास्थान स्थापित किया गया है।

4. न्यादर्श विधि एवं समंकों की समग्र विधि को शोध प्रबंध में प्रतिपूर्ति की गई है।

5. प्रतिशत औसत एवं अपकिरण की वैज्ञानिक विधि प्रमाप विचलन को शोध संरचना में पिरोया गया है।

जहां तक संग्रहण का प्रश्न है, सामग्री का संकलन दो विधियों से सामान्यतः किया जाता हैं :–

1. प्राथमिक सामग्री का संकलन

2. द्वितीयक सामग्री का संकलन

प्राथमिक सामग्री का अर्थ उस सामग्री से होता है जो कि मूलतः शोधकर्ता द्वारा व्यक्तिगत रूप से संकलित की जाती है। प्राथमिक सामग्री का संकलन एक प्रश्नावली के माध्यम से किया जाना प्रस्तावित है।

शोध कार्य का आधार प्राथमिक एवं द्वितीयक समंक होते है मेरे अध्ययन का विषय पर्यटन क्षेत्र से संबंधित है और इस क्षेत्र में द्वितीयक आंकड़े पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। अतः मैनें अपने अध्ययन में द्वितीयक समंकों को आधार बनाया है। विभिन्न परिणामों के संतुष्टि हेतु प्राथमिक संमकों का भी सहारा लिया है द्वितीय समंकों का संकलन प्रकाशित पुस्तकों एवं पत्रिकाओं के माध्यम से किया गया है।

शोधकर्ता के लिए आवश्यक है कि समय सीमा के साथ–साथ भौगोलिक सीमा को भी ध्यान में रखे अतः मैंने अपने अध्ययन को छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर संभाग तक सीमित रखा है।

जबकि द्वितीयक सामग्री का संकलन अथवा एकत्रीकरण शासकीय कार्यालयों, पत्र–पत्रिकाओं, ग्रंथालयों इत्यादि से प्राप्त की जाती है। जिसका मूल रूप में संकलन शोधकर्ता द्वारा नहीं किया जाता है। इस शोध प्रबंध की मुख्यतः द्वितीय सामग्री होगी। द्वितीय समंकों के आधार पर शोध समिधा बनाई गई है।

छत्तीसगढ़ राज्य में बस्तर संभाग के पर्यटन उद्योगों की परिकल्पनाएं

परिकल्पनाएं :–

शोध विषय क बारे में प्रारंभिक ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् अपने दिमाग में एक ऐसा सिद्धान्त बना लेता है कि यह सिद्धांत शायद अनुसंधान का आधार सिद्ध हो सकता है। किन्तु वह ऐसे काल्पनिक निष्कर्ष को अंतिम चरण मानकर नहीं चलता बल्कि उसकी प्रमाणिकता को अपने वास्तविक अनुभवों व तथ्यो के द्वारा सिद्ध करने का प्रयत्न करता है।

परिकल्पना वह चिंतन है जो अनुसंधान पूर्व किया जाता है। अनुसंधान प्रारंभ करने से पहले अनुसंधान के कारणों और परिणामों के विषय में हम जो एक अवधारणा बना लेते हैं उसे ही परिकल्पना संकल्पना कहते हैं।

परिकल्पना के माध्यम से हमें समस्या की प्रारंभिक जानकारी प्राप्त होती है।

पर्यटन जहाँ रोजगार की संभावना बढ़ा रहा है वहीं विदेशी मुद्रा अर्जित करने का एक उत्तम क्षेत्र भी है। छत्तीसगढ़ राज्य उन चुनिंदा राज्य में से एक है जहां सांस्कृतिक, कलात्मक, धार्मिक एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर दर्शनीय स्थलों की कमी नहीं है और यही कारण है कि हजारों मील का सफी बड़ी उत्साह के साथ तय कर भी पर्यटक यहां आने को उत्सुक रहते हैं। छत्तीसगढ़ राज्य की अर्थ व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं पर नजर रखने वाले अर्थशास्त्री और नीति निर्धारकों ने भी लगभग एकमत होकर स्वीकार किया कि यदि इन संसाधनों का समुचित उपयोग किया जाए तो पर्यटन उद्योग छत्तीसगढ़ राज्य में बस्तर संभाग में काफी विकासित हो सकता है।

पर्यटन उद्योग कुछ बड़े उद्योगों में से एक है। एक उद्योग का दर्जा प्राप्त होने के कारण इससे जुड़े सभी क्षेत्रों में कैरियर की संभावना भी काफी प्रबल एवं विस्तृत है। आजकल की व्यस्त दिनचर्या से अलग मनोरंजक एवं आरामदायक यात्रा काफी आत्म संतुष्टि का बोध कराता है।

पर्यटन उद्योग एवं इससे जुड़े अनेक व्यवसाय की सीमाओं का विस्तार क्षेत्र का परोक्ष या अपरोक्ष रूप से वृहत है जिसके अन्तर्गत ट्रवल्स एजेंसियां, टूर ऑपरेशन कंपनियां, विभिन्न एयर लाईन्स कार्यालय, पर्यटक सूचना केन्द्र, टूरिस्ट गाइड, ट्रेवल्स पत्र–पत्रिकाओं एवं विभिन्न टी.वी. चैनलों में रोजगार की भरपूर संभावनाएं हैं।

निम्नांकित परिकल्पनाओं के माध्यम से शोध प्रबंध को गतिशील बनाया गया है :–

1. पूर्व की अपेक्षा वर्तमान में बस्तर के प्रति पर्यटन संबंधी जागरूकता में वृद्धि हुई है।
2. केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा बस्तर संभाग में पर्यटन उद्योग के विकास के लिए विभिन्न योजनाएं संचालित हैं और इन योजनाओं द्वारा सैलानियों के संख्या में वृद्धि हुई है।

3. छत्तीसगढ़ राज्य के आर्थिक विकास में बस्तर संभाग के पर्यटन स्थानों की भूमिका सर्वाधिक है।
4. छत्तीसगढ़ राज्य में पर्यटन उद्योगों के स्थापना के फलस्वरूप रोजगार में आशातीत वृद्धि।
5. छत्तीसगढ़ राज्य में पर्यटन उद्योगों में वृद्धि के फलस्वरूप सहायक उद्योग धंधे में प्रगति।

संदर्भ ग्रंथ–सूची

क्रं	लेखक का नाम	पुस्तक का नाम	प्रकाशक	संस्करण
1.	तिवारी डॉ. डी. बी.	शोध संकल्प	दीपक अग्रवाल राधिका नगर, भिलाई	2012
2.	कुमार अंजन	शोध संकल्प	मनीष तनेजा भिलाई	2012
3.	शर्मा डॉ. सुधीर	शोध प्रबंध	गीता पब्लिकेशन महामाया पारा, रायपुर	2011
4.	डॉ रामकुमार बेहार	शोध उपक्रम	छत्तीसगढ शोध संस्थान	2010
5.	सहाय डॉ. शिवस्वरूप	भारत में पर्यटन एवं पर्यटन सिद्धांत	मोतीलाल बनारसीदास द्वारा प्रकाशित	2005
6.	दास गुप्ता डॉ. पापिया	पर्यटन एक अध्ययन	मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी	2011
7.	जैन के. पी.	छत्तीसगढ़ अध्ययन	मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी	2009
8.	मिश्र डॉ. मनमोहनलाल	परिवहन एवं आर्थिक विकास		
9.	चतुर्भुज मामोरियल	छत्तीसगढ़ अर्थव्यवस्था एवं प्रारंभिक जानकारी		
10.	नागर एंड नागर	तुलनात्मक आर्थिक समस्याएं		

11.	नागर एंड नागर	तुलनात्मक आर्थिक समस्याएं		
12.	अन्य पत्र–पत्रिकाए	इकानॉमिक्स सर्वे प्रतियोगिता दर्पण प्रतियोगिता किरण टाईम्स ऑफ इंडिया नवभारत देशबंधु दैनिक भास्कर नई दुनिया हरि भूमि क्रानिकल पत्रिका		
13.		www.chhattisgarhtourism.net www.indiatourism.net		

छत्तीसगढ़ राज्य में बस्तर संभाग के विकास में पर्यटन उद्योगों की भूमिका एवं चुनौतियाँ

शोध विषय की रूपरेखा

अध्याय 1 : अध्यागत शोध प्रबंध का महत्व एवं परिकल्पनाएं

1.1 भूमिका

1.2 विषय चयन का उद्देश्य

1.3 अध्यागत शोध कार्य का महत्व पर्यटन उद्योग के संदर्भ में

1.4 शोध अध्ययन सीमा या क्षेत्र

1.5 छत्तीसगढ़ राज्य में शोध कार्य की परिकल्पना एवं शोध प्रविधि

अध्याय 2 : छत्तीसगढ़ राज्य का संक्षिप्त परिचय

2.1 छत्तीसगढ़ की धरोहर, प्राकृतिक संसाधन एवं ऊर्जा स्त्रोत

2.2 छत्तीसगढ़ राज्य की दशा एवं दिशा – विभाजन पूर्व/पश्चात्

2.3 छत्तीसगढ़ राज्य की कार्यप्रणाली एवं विकास की गति

2.4 छत्तीसगढ़ के पर्यटन स्थल

2.5 छत्तीसगढ़ राज्य में स्थित बस्तर संभाग का परिचय

अध्याय 3 : छत्तीसगढ़ राज्य में पर्यटन उद्योग

3.1 पर्यटन उद्योग का परिचय

3.2 पर्यटन उद्योग का क्षेत्र

3.3 छत्तीसगढ़ राज्य के विकास में पर्यटन उद्योग की समिधा

3.4 पर्यटन उद्योग के महत्व

3.5 नवोदित छत्तीसगढ़ राज्य में पर्यटन उद्योग की भूमिका

अध्याय 4 : बस्तर संभाग में पर्यटन उद्योग की भूमिका

4.1 छत्तीसगढ़ राज्य की अविभाजन पूर्व/पश्चात् पर्यटन उद्योग

4.2 पर्यटन उद्योग की उपलब्धियाँ

4.3 बस्तर संभाग में पर्यटन उद्योग के विकास की संभावनाएं

4.4 पर्यटन उद्योगों के प्रोत्साहन हेतु सरकार की नीतियां

4.5 पर्यटन उद्योग के विकास की चुनौतियाँ

अध्याय 5 : बस्तर संभाग में पर्यटन उद्योगों के संबंध में पक्षकारों का अभिमत

5.1 जनतंत्र एवं राज्य शासन का अभिमत

5.2 अधिकारियों का पर्यटन उद्योग के संबंध में मंतव्य

5.3 पर्यटन संचालक एवं कर्मचारियों के विचार

5.4 पर्यटन उद्योग के संबंध में पर्यटकों से समीक्षा

5.5 स्थानीय जन–प्रतिनिधियों का सुझाव

अध्याय 6 : बस्तर संभाग के विकास में पर्यटन उद्योगों की चुनौतियों का मूल्यांकन

अध्याय 7 : शोध कार्य के दौरान पर्यटन उद्योग की विविध समस्याएँ एवं महत्वपूर्ण सुझाव

7.1 शोध कार्य के दौरान पर्यटन उद्योग की विविध समस्याएँ

7.2 शोध प्रबंध की समस्याओं के निवारण हेतु सार्थक प्रयास

7.3 महत्वपूर्ण एवं उत्साहजनक उद्देश्यों हेतु सुझाव

अध्याय 8 : निष्कर्ष एवं उपसंहार

8.1 संदर्भित ग्रंथ सूची

8.2 तालिका सूची

8.3 पत्र एवं पत्रकाएं

8.4 प्रश्नावली का प्रारूप

8.5 अन्य संबंधित प्रपत्र

निर्देशक

डॉ. देवाशीष मुखर्जी

प्रस्तुतकर्ता

श्रीमती श्वेता महाकालकर

सह–निदेशक/अनुमोदक

डॉ. एस. एस. खनूजा